thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक : 38
सृष्टि संवत् 1960853115
28 दिसम्बर 2014
दयानन्दब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726
जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 38, 25/28 दिसम्बर 2014 तदनुसार 13 पौष सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

प्रकृति माता-पुत्र को पिता के हवाले नहीं करती

-ले० श्री स्वामी वेदानन्द जी (दयानन्द) तीर्थ

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुह्या बिभर्ति न ददाति पित्रे।
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ।।

-ऋ. 5/2/1

शब्दार्थ- **युवतिः**=सदा जवान, संयोग-वियोग के स्वभाववाली प्रकृति **माता**= माता **समुब्धम्**= मूढ़, विवेक-विहीन **कुमारम्**= कुमार को, कुत्सित कामनाक्रान्त जीवन को **गुहा** = अपनी गोद में **बिभर्ति** = पालती है, रखती है और **पित्रे** = पिता को **न**= नहीं **ददाति**= देती है **अस्य**= इसकी **अनीकम्**= शक्ति **न**= नहीं **मिनत्** = नष्ट होती। **जनासः**= लोग **अरतौ** = अरति में **निहितम्** = पड़े हुए को **पुरः** = सामने, समक्ष **पश्यन्ति** =देखते हैं।

व्याख्या= वेद ने यहां एक ऐसा मर्म बताया है जो सर्वथा प्रत्यक्ष है, किन्तु संसारी जीव उसे देख नहीं पाते। शायद इसी दशा को देख कर किसी ज्ञानी ने कहा है-**पश्यन्नपि न पश्यति शृण्वन्नपि न शृणोति, जानन्नपि न जानाति**- देखता हुआ भी नहीं देखता है, सुनता हुआ भी नहीं सुनता है, जानता हुआ भी नहीं जानता है। हम प्रतिदिन लोगों को मरते देखते हैं। मृतकों को शमशान ले जाते हैं, अपने हाथों से जलाते हैं, किन्तु कितने हैं जिन्हें यह विचार आता हो कि एक दिन हमारी भी यही अवस्था होगी, हमें भी इस संसार से कूच करना होगा। पुत्र कलत्र, मित्र सभी यहीं रह जाएंगे, कोई साथ नहीं जाएगा। जीव की इस मूढ़ अवस्था का ही वर्णन मंत्र के पूर्वार्ध में है। प्रकृति माता के रूप में =पालिका, लालिका के रूप में आती है और उसे अपनी गोद में छिपा लेती है। जो वास्तविक पालक हैं, उस परमपिता के पास नहीं जाने देती। प्राकृतिक विषयों में फंसा जीव परमात्मा को भूल जाता है। इसी भाव को एक महात्मा ने यों कहा है- अनृतेन प्रत्यूढ़ाः= असत्य से प्रभावित हो रहे हैं। सचमुच परमात्मा से दूर होना असत्य-प्रवाह में गिरना है। प्रकृति-माया बड़ी ठगनी हैं। किसी संत के इस स्वरूप को कितने जानते है? हां, एक आश्वासन है। प्रकृति की गोद में छिप कर भी-**अनीकमस्य न मिनत्** इसके सामर्थ्य का नाश नहीं होता। जीवन का जो स्वाभाविक ज्ञान है, वह बना रहता है, मूढ़ होकर भी ज्ञानहीन नहीं होता। इससे आशा बनी रहती है, कभी कोई ज्ञानी सन्त मिलेगा, तो कदाचित् उसके सत्संग से इसे होश आ जाए और प्रत्यक्चेतना जाग पड़े।

वर्ष 2015 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2015 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकडा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

ज्ञानीजन देख रहे हैं कि यह अरति में फंसा है। रति की खोज में- सुख की तलाश में गया था। अज्ञान के कारण अरति में फंस गया। आखिर कुमार ही है न। साथ ही है समुब्ध= भोला। कुमार=कुत्सित काम वाला=बुरी वासनाओं वाला। प्रकृति प्रत्येक जीव को नहीं पकड़ती। यह उसे पकड़ती है जो कुमार हो, युवा या वृद्ध न हो। कुमार का अर्थ लौकिक संस्कृत में बालक होता है। बाल अज्ञानी को कहते हैं। ब्रह्मज्ञान से शून्य अज्ञानी नहीं तो और क्या है? कुमार का चित्त खेल कूद में रहता है। वैसे लोक में भी देखिए, मूढ़ अवस्था में बालक माता की गोद का आश्रय अधिक लेता है। बड़ा होकर ही मां की गोद से पृथक होता है। यही अवस्था जीव की है। जब तक अज्ञानी है, तभी तक प्रकृति को माता मान रहा है। ज्ञानोन्मेष होने पर यह प्रकृति की गोद छोड़ देता है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

न दर्पमारोहति-आर्यों के परमशील का वर्णन करते हुए विदुर आगे कहते हैं-न दर्पमारोहति नास्तमेति-न तो वह कभी अभिमान में भरकर कोई कार्य करता है और न कभी वह अपने को अस्त होने देता है। मनुष्य की दो ही अवस्थाएं ऐसी हैं जो उसे अपराध की ओर प्रवृत्त करती हैं-एक अभिमान की अवस्था, दूसरी अवसाद की अवस्था। आर्य इन दोनों से बचकर रहता है। वह अपने में दर्प, अभिमान, अहंकार, गर्व इनको नहीं आने देता और न ही अवसाद की अवस्था में अपने को अकिञ्चन समझना, तुच्छ समझना, हीन समझना, बुझ जाना इत्यादि निर्बलताओं को अपने पास फटकने नहीं देता। अहंकार और अभिमान के उदाहरण रावण, कंस, दुर्योधन और हिरण्याक्ष थे, अवसाद का मूर्त रूप तो कुरूक्षेत्र भूमि में कुछ समय के लिए अर्जुन को देख सकते हैं। अभिमान भयंकर शत्रु है। महाप्राज्ञ विदुर का कथन है-बुढ़ापा रूप को हर लेता है, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राणों को, असूया धर्माचरण को, काम लज्जा को। अनार्यों की सेवा वित्त को, क्रोध लक्ष्मी को और अभिमान सर्वस्व को हर लेता है, उसका कुछ भी बाकी नहीं रहता। इसलिए हमेशा ध्यान रखें कि व्यक्ति अहंकार से बचा रहे।

नास्तमेति-आर्यशीलों में तीसरा स्थान-नास्तमेति-कभी अस्त नहीं होता निराश नहीं होता। अर्जुन की भांति कदापि यह नहीं कहता-**वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते, गाण्डीवं स्रंसते हस्तात् त्वक्चैव पारिदह्यते, न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः।** गीता १.३०

जो कभी परास्त नहीं हुआ था वह अपने आप में अस्त नहीं हुआ करता, परास्त होने की तो कोई बात ही नहीं। ये दोनों अवस्थाएं प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आती हैं-जन्म और मृत्यु, उदय और अस्त। आर्य पुरूष सूर्य की भांति दोनों अवस्थाओं में अपनी कांति को नहीं खोता-कांति बनाए रखता है।

उदये सविता रक्तः रक्तश्चास्तमने तथा। सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

वह सूर्य की भांति उदय और अस्त के समय अपनी कान्ति को नहीं खो देता। वह विश्राम की अवस्था को अस्त अवस्था मानता है, मानो घर में विश्राम कर रहे हो, अतः वेदों में गृह को अस्त कहते हैं। राम इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। वसिष्ठ उनकी प्रशंसा में कहते हैं कि-मैंने राम की दोनों अवस्थाएं देखी हैं, राज्य प्राप्ति रूप उदय की अवस्था, राज्य-हरण रूप अस्त होने की अवस्था-उन दोनों अवस्थाओं में राम के चेहरे पर कोई विकार नहीं था-**''आहूतस्याभिषेकाय निःसृष्टश्च वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य किञ्चिदप्याकार-विभ्रमः॥'' (रामायण)**

इस प्रसंङ्ग में विद्वान् पुरूष विदुला और उसके पुत्र के संवाद रूप इस पुरातन इतिहास का उदाहरण दिया करते हैं कि अस्तावस्था को प्राप्त हुए अपने पुत्र की किस प्रकार ताड़ना कर उससे उदबुद्ध करती है-

एक समय उनका पुत्र सिन्धुराज से पराजित हो अत्यन्त दीनभाव से घर आकर सो रहा था। राजरानी विदुला ने अपने इस औरस पुत्र को इस दशा में देख कर उसकी बड़ी निन्दा की।

आनन्दन मया जात द्विषतां हर्षवर्धन। न मया त्वं न पित्रा च जातः क्वाभ्यागतो ह्यसि॥ अरे तू मेरे गर्भ से उत्पन्न हुआ है, तो भी तू मुझे आनन्दित करने वाला नहीं है। तू तो शत्रुओं का ही हर्ष बढ़ाने वाला है, इसलिए अब मैं ऐसा समझने लगी हूं कि तू मेरी कोख से ही पैदा नहीं हुआ। तेरे पिता ने भी तुझे उत्पन्न नहीं किया, फिर तुझ जैसा कायर कहां से आ गया।

उत्तिष्ठ हे कापुरूष मा शैष्वैवं पराजितः। अमित्रान् नन्दयन् सर्वान् निर्मानो बन्धुशोकदः॥ ओ कायर! उठ खड़ा हो इस तरह शत्रु से पराजित होकर घर में शयन न कर (उद्योग-शून्य न हो जा)। ऐसा करके तू सब शत्रुओं को ही आनन्द दे रहा है और मान-प्रतिष्ठा से वंचित होकर बन्धु बान्धवों को शोक में डाल रहा है। अप्यहेरारुजन् द्रष्ट्रामाश्वेव निधनं व्रज। अपि वा संशयं प्राप्य जीवनेऽपि पराक्रमे॥१०॥ तू शत्रु रूपी सांप के दांत तोड़ता हुआ तत्काल मृत्यु को प्राप्त हो जा। प्राण जाने का सन्देह हो तो भी शत्रु के साथ युद्ध में पराक्रम ही प्रकट कर॥

अप्यरेः श्येनवच्छिद्रं पश्येस्त्वं विपरिक्रमन्। विनदन् वाथवा तूर्ष्णी व्योम्नि वापरिशङ्कितः॥११॥ आकाश में निःशङ्क होकर उड़ने वाले बाज पक्षी की भांति रणभूमि में निर्भय विचरता हुआ तू गर्जना करके अथवा चुप रहकर शत्रु के छिद्र देखता रह।

त्वमेवं प्रेतवच्छेषे कस्माद्व-ज्रहतो यथा। उत्तिष्ठ हे का पुरूष मा स्वाप्सीः शत्रु निर्जितः॥१२॥ -कायर! तू दीन होकर अस्त न हो जा। अपने शौर्यमुक्त कर्म से प्रसिद्धि प्राप्त कर। तू मध्यम, अधम अथवा निकृष्ट भाव का आश्रय न ले, वरन् युद्धभूमि में सिंहनाद करके डट जा॥१३॥ अलातं तिन्दुकस्येव मुहुर्तमपि विज्वल। मा तुषाग्निरिवानर्चिर्धूमायस्व जिजी-विषुः॥१४॥-तू तिन्दुक की जलती हुई लकड़ी के समान दो घड़ी के लिए भी प्रज्वलित हो उठ (थोड़ी देर के ही लिए सही, शत्रु के सामने महान् पराक्रम प्रकट कर) परन्तु जीने की इच्छा सी भूसी की ज्वाला रहित आग के समान केवल धुआं न कर (मन्द पराक्रम से काम न ले)॥१४॥ मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयो न तु धूमायितं चिरम्। मा ह स्म कस्यचिद् गेहे जनि राज्ञः खरो मृदुः॥१५॥ दो घड़ी भी प्रज्वलित रहना अच्छा, परन्तु दीर्घकाल तक धुआं छोड़ते हुए सुलगना अच्छा नहीं। किसी भी राजा के घर में अत्यन्त कठोर अथवा अत्यन्त कोमल स्वभाव के पुरूष का जन्म न हो॥१५॥

जब तक जीवन है, प्राण हैं, तब तक बराबर जलता रहे बुझे नहीं दीपक में जब तक फैल कर तेल और बत्ती रहे और वह बुझ जाए भयंकर झंझावात में भी जलता रहे अपने प्रकाश से सबको आलोकित करता रहे। जब तेल और बत्ती न रहेगी तो उस मिट्टी के पात्र से क्या ? वह मिट्टी से बना मिट्टी में मिल जाएगा। उदय और अस्त दोनों अवस्थाएं सूर्य के साथ भी लगी है। यह कैसे संभव है कि सूर्य उदय हो और अस्त न हो। जो उदय हुआ है उसका अस्त होना अवश्यम्भावी है। परन्तु प्राण रहते कभी अस्त न हो। यहां प्रसंगोपात्त एक महामानव के अन्तिम क्षणों के वर्णन का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे। उस महामानव का नाम महर्षि दयानन्द था। उनकी अन्तिम घड़ी का वर्णन श्रीमद-दयानन्द प्रकाश के लेखक श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने इस प्रकार चित्रित किया है-

उसी दिन लाहौर से लाला जीवन दास और पण्डित गुरूदत्त जी वहां पहुंचे। नम्र नमस्कार करके लाला जी पलंग के पायताने की ओर बैठ गए, महाराज ने उनको आंख खोलकर देखा। फिर उनको हाथ से पकड़ अपनी ओर खींचकर लाहौर की सामाजिक सृष्टि का सुख-समाचार पूछा। उसी समय लाला जी ने पण्डित गुरूदत्त का परिचय कराया। पण्डित महाराज ने उठकर बड़ी विनीतता से श्रीचरण छूकर नमस्कार किया।

श्रीमन्महाराणा सज्जन सिंह जी ने उदयपुर से पाण्ड्या मोहन लाल जी को पूज्यपाद जी का कुशल समाचार पूछने के लिए भेजा। पाण्ड्या जी ने चरण वन्दना की और बताया कि श्रीमहाराणा जी आपकी व्याधिका वृत्त जानकर अति चिन्तित हो रहे हैं। वे रात दिन आपका स्वास्थ्य समाचार जानने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। महाराज आज आपकी परोपकार मूर्ति की अवस्था देखकर मैं भी अति अधीर हो रहा हूं। भगवन, भारत-भूमि के शुभ भाग्य प्रभात को आहूत करने के लिए आप जैसे भारत भक्तों की अभी बड़ी भारी आवश्यकता है। ये हमारे, हमारी जाति के और हमारे देश के दुर्दिन हैं जो आपकी दयापूर्ण देह इस दुःखद दशा में आ पड़ी है।

महाराज ने कहा कि पण्डया जी खेद से खिन्न न होइए। अब विधाता की ऐसी ही इच्छा है। देह का बनना और बिगड़ना तो पानी के बुद्दे और सागर तरंग की भांति होता ही रहता है। यह मृत्युलोक मरणाभिमुख है। कोई न होनी होने लगे तो उसका कोई शोक भी करे, परन्तु मिलकर टूटना, बनकर बिगड़ना, होकर न रहना, जन्म कर मर जाना तो जगत् का अवश्यम्भावी नियम है। इसके लिए सोचना नहीं चाहिए! **(क्रमशः)**

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

पेशावर में बच्चों पर आतंकी हमला मानवता को शर्मसार करने वाला कृत्य

पाकिस्तान के पेशावर में आर्मी स्कूल के बच्चों पर हमला करके आतंकियों ने अपनी संकीर्ण मानसिकता का परिचय दिया है। जिस प्रकार तालिबान आतंकियों ने पेशावर के एक स्कूल में धावा बोलकर मासूम स्कूली बच्चों को मारा है ऐसे तो कोई भेड़ बकरियों को भी नहीं मारता। इस प्रकार के भयावह और आतंकी हमले की कल्पना करना भी मुश्किल है। पाकिस्तान और साथ ही दुनिया के देशों में सक्रिय आतंकी हमले होते रहते हैं और निर्दोष लोगों की जानें लेते रहते हैं लेकिन खासतौर पर स्कूली बच्चों का संहार तो पागलपन और कायरता की पराकाष्ठा है। पेशावर के आर्मी स्कूल में मंगलवार को आतंकियों ने खून की जो होली खेली है उसे दुनिया कभी नहीं भुला पाएगी। पेशावर के सैन्य स्कूल में तालिबान आतंकियों के हमले में सौ से भी स्कूली बच्चों की हत्या एक तरह से मानवता को शर्मसार करने वाला कृत्य है। ऐसा कृत्य तो एक वहशी ही कर सकते हैं। स्कूली बच्चों की हत्या करने के बाद जिस तरह से तालिबान आतंकियों ने हमले की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि उनके अन्दर मानवता नाम की कोई चीज नहीं है। ऐसा जघन्य कृत्य करने वाले न तो किसी धर्म को मानने वाले होते हैं और न ही उन्हें मनुष्य कहा जा सकता है। हमला करने के बाद जिस तरह से उन्होंने हमले की जिम्मेदारी लेने में जरा भी शर्म नहीं दिखाई है, वह इस बात का प्रतीक है कि वे इसे बहादुरी का कार्य समझते हैं। आतंकी समझते हैं कि उन्होंने निर्दोष और असहाय बच्चों को मारकर अपनी वीरता का परिचय दिया है। यह सोचकर ही सिर शर्म से झुक जाता है कि आज के युग में इस धरती पर ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो बच्चों के कत्ल को जायज ठहराने की कोशिश कर रहे हैं। इससे घृणित कार्य और कोई नहीं हो सकता। जिन माँ बाप ने अपने बच्चों को बड़े लाड़ प्यार से पाला-पोस कर बड़ा किया था उनके दिल पर क्या बीत रही होगी, इस का अन्दाजा वे निर्दयी, कायर और पागल आतंकी क्या लगा सकते हैं।

निंदा आलोचना करने के साथ यह समय आत्मचिंतन करने का भी है। सबसे अधिक आत्मचिंतन पाकिस्तान को करना है जो आतंकियों को पनाह देता है। एक तरफ तो पाकिस्तान आतंक को जड़ से मिटाने की बात करता है परन्तु दूसरी ओर मुम्बई हमले के मास्टरमांइड और लश्कर-ए-तोयबा के कमांडर जकीउर रहमान लखवी को पाकिस्तान की आतंकवाद निरोधी अदालत ने जमानत दे दी है। इतना बड़ा नरसंहार होने के बाद भी पाकिस्तान ने उससे कोई सबक नहीं लिया और सबसे बड़े आतंकी को जमानत दे दी। पाकिस्तान यह कहकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं कर सकता कि वह खुद आतंकवाद का शिकार है। पाकिस्तान में आए दिन ऐसी घटनाएं देखने को मिलती रहती हैं। पाकिस्तान को अपनी करनी का फल मिल रहा है क्योंकि हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि जो जैसा बीज बोता है वैसी ही फसल प्राप्त करता है। आज पाकिस्तान में जो कुछ भी हो रहा है यह उसी का परिणाम है। अगर पाकिस्तान ने आतंक को खत्म करने में तत्परता दिखाई होती और आतंकियों को पनाह न दी होती तो आज उसे यह दिन देखना नहीं पड़ता। हाफिज सईद, दाऊद जैसे आतंकियो को शरण देकर पाकिस्तान अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मार रहा है। इस तरह की घटनाएं मानवता के लिए कलंक होती हैं।

तालिबान आतंकियों ने दिल को दहला देने वाली घटना को ऐसे समय अंजाम दिया है जब एक ओर पाकिस्तानी सेना उनके सफाए में जुटी हुई थी और दूसरी ओर शांति के पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद मलाला युसुफजई बच्चों की शिक्षा के लिए कहीं अधिक जोरदारी से अलख जगा रही थी। तालिबान आतंकियों को मलाला की पहल कभी रास नहीं आई। लगता है कि वे मलाला के साथ-साथ बच्चों की शिक्षा की पैरवी करने वाले लोगों को भी कोई संदेश देना चाह रहे थे। ऐसी अमानवीय घटनाओं को स्वीकार नहीं किया जा सकता। ऐसी क्रूरता की घटनाएं कहीं पर भी और किसी भी समय किसी के साथ भी घट सकती हैं। हमें समय रहते ऐसी घटनाओं से बचाव करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी शिक्षा संस्था के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी-अपनी शिक्षा संस्था में बच्चों की सुरक्षा के पुख्ता इन्तजाम करें। बच्चों की सुरक्षा के लिए अपनी शिक्षा संस्था के सभी टीचिंग, नॉन टीचिंग कर्मचारियों व विद्यार्थियों के पहचान पत्र बनवाएं जिसे वे हर समय स्कूल में पहन कर रखें। शिक्षण संस्था के गेट पर सिक्योरिटी लगा कर बाहरी व्यक्तियों के प्रवेश पर पूरी तरह से रोक लगाई जानी चाहिए और वहां पर कैमरे लगा कर चौकसी बरती जानी चाहिए। इसके साथ ही शिक्षण संस्था में एक इमरजेंसी रास्ता भी होना चाहिए ताकि किसी भी आपात् स्थिति में उसका प्रयोग किया जा सके। बच्चे किसी भी राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति होते हैं। उनका निर्माण करना, अच्छे संस्कार देकर राष्ट्रभक्त बनाना हमारा उत्तरदायित्व बनता है, इसके साथ ही उनकी देखभाल करना, उन्हें सुरक्षा प्रदान करना भी हमारा कर्त्तव्य बनता है। पेशावर जैसी घटना कहीं पर किसी के साथ न हो, इसके लिए हमें स्वयं तैयार रहना चाहिए। पेशावर जैसी मानवता को शर्मसार कर देने वाली घटना की जितनी निन्दा की जाए उतनी कम हैं। ऐसे क्रूरतापूर्ण कार्य के लिए उन आतंकियों को कभी माफ नहीं किया जाना चाहिए। हमारी संवेदना उन शोक संतप्त माता-पिता के साथ है जिनके घर के चिराग बुझ गए हैं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज फिरोजपुर छावनी का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज फिरोजपुर छावनी का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम तथा श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया जिसमें वैदिक विद्वान् आचार्य श्री देवराज जी कपूरथला के ब्रह्मत्व में गायत्री महायज्ञ हुआ। आचार्य देवराज ने गायत्री महिमा का महत्त्व बताया। आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक आचार्य नारायण सिंह के सारगर्भित उपदेश तथा श्री सतीश सुमन के भजन हुए। यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त आर्य समाज के प्रधान श्री विजयानन्द जी ने सभी का धन्यवाद किया। उपप्रधान श्री विजयपाल आनन्द, राजेन्द्र सोनी, संजीव अग्रवाल, स्थानीय विद्वान् पं, सुनील दत्त शास्त्री व पं. मनमोहन शास्त्री व अन्य आर्य समाजों के पदाधिकारीगण विशेष रूप से सम्मिलित हुए। यह समाज आर्य समाज के यशस्वी महामन्त्री मनोज आर्य के नेतृत्व में समाज सेवा में संलग्न है। शान्ति पाठ के पश्चात ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई।

-सुरेन्द्र कुमार मल्होत्रा प्रचार मन्त्री आर्य समाज

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा क्रान्तिकारी विचारों की मौलिक झलक

-ले० पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक

युगों के उपरान्त अठाहरवीं शताब्दी में इस धरती पर देव दयानन्द ऐसे महान सुधारक थे, जिन्होंने सभी समाज सुधारकों को पीछे छोड़कर एक नयी वैचारिक क्रान्ति का शंखनाद किया। उन्होंने अद्भुत साहस दिखाकर धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक कुरीतियों पर जोरदार प्रहार किया। ऐसे कठिनतम कार्य को तो एक ऋत देवता ही कर सकता था।

भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण बात पायी जाती है कि जिन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति के जीवन को पलट दिया, वे आबाल ब्रह्मचारी रहे हैं। ऋषि दयानन्द आदित्य ब्रह्मचारी थे। स्वामी शंकराचार्य आबाल ब्रह्मचारी थे। स्वामी विवेकानन्द भी आबाल ब्रह्मचारी थे। महात्मा गांधी आबाल ब्रह्मचारी तो न थे, परन्तु ब्रह्मचारी रहने का उनका संकल्प दृढ़ था। इन महापुरुषों के विचारों ने भारत के कोने-कोने को व्याप लिया था। अपने-अपने समय में महान कार्य किया और एक दूसरे से कड़ी जोड़ने का कार्य किया। ऐसा प्रतीत होता है कि भविष्य में भी इस देश का कर्णधार वही हो सकेगा, जो आबाल ब्रह्मचारी रहकर देश की चुनौतियों को स्वीकार कर चैलेन्ज करेगा।

देखने में आया कि महर्षि दयानन्द जी ने समकालीन व जिन कुरीतियों के संस्कार भारत के नर-नारी में खून के एक-एक कतरे में समा गये थे, उन पर प्रहार किया, जिनकी जड़ें बहुत गहरी चली गयी थीं। यह अपने आप में सर्वोच्च महान कार्य था आइए विचार करते हैं।

1. धार्मिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार-भारत का धर्म वेदों से बंधा हुआ था और नर-नारी में वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा थी और हिन्दु धर्म की आधार शिला वेद थे। हिन्दू लोग वेदों से इधर-उधर नहीं जा सकते थे। किन्तु दयानन्द से पूर्व वेदों के विद्वानों ने वेदों के अर्थ का अनर्थ किया हुआ था, उनमें सायणाचार्य, महीधर, मैक्समूलर जेकोजी, शंकराचार्य आदि ने वेद मंत्रों का इतिहासपरक अर्थ करके सम्पूर्ण समाज को गहरे अंधेरे कुएं में डाल दिया था। उन्होंने प्रचलित किया कि वेदों में पशुबलि है, वेदों में नारी को पढ़ने का अधिकार नहीं है। वेदों में जाति प्रथा है, वेदों में मूर्ति पूजा है। वेदों में भूत-प्रेत, जादू-टोना है। वेदों में काल्पनिक देवी-देवता हैं। वेदों में छुआछूत है। इस प्रकार वेदों के अर्थों को अपने स्वार्थ के लिये बदल दिया गया था। भारत की भोली जनता इसका शिकार बन गयी थी।

महर्षि दयानन्द जी ने सर्वप्रथम वेदों के रूढ़ी अर्थों पर प्रहार किया, उन्होंने उन मन्त्रों के अर्थों को शुद्ध करके प्रमाणित किया कि वेदों में महिलाओं व शूद्रों को पढ़ने का अधिकार है। वेदों में मूर्ति पूजा नहीं है, जाति व्यवस्था नहीं है, पशुबलि नहीं है। वेदों के शब्दों का सही अर्थ विज्ञान व सृष्टि क्रमानुसार करके जनता के सामने रखा और एक वैचारिक नई क्रान्ति ने जन्म लेकर सदियों से चली आ रही अन्य परम्पराओं को धराशायी कर दिया। महर्षि दयानन्द ने धर्म के सत्य अर्थ सामने रखे, जमाने की दिशा ही बदल दी, जमाने की गर्दन पकड़कर अपने पीछे चलाया। निरन्तर सत्य, धर्म का प्रचार करते रहने के लिए आर्य समाज क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। आर्य समाज ने सम्पूर्ण विश्व में अन्ध विश्वास की चूलें हिला कर रख दीं।

2. सामाजिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद का प्रहार-महर्षि दयानन्द भूत, वर्तमान तथा भविष्य को पिछले तथा अगले को मिलाकर चलना चाहते थे। उनका सर्वथा मौलिक दृष्टिकोण था। यही कारण था कि सिर्फ भूत के साथ चिपटे रहने वाले रूढ़ीवाद का सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने बहिष्कार किया। वे सामाजिक कुरूतियों के स्थिरता के पक्षधर नहीं थे। किन्तु उनके समय में हिन्दु समाज नवीनता से डरता था। वह बहुत कठिन दिन थे, सदियों पुराने सामाजिक कुप्रथाओं को मिटाना आसान कार्य नहीं था, किन्तु देव दयानन्द सत्य की राह से जरा भी नहीं डिगे। एक नयी सामाजिक क्रान्ति को जन्म दे ही दिया। ऋषि दयानन्द जी के उद्योग का परिणाम था कि समाज में धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा। स्त्रियों के प्रति जहाँ ''स्त्री शूद्रो नाधीयाताम'' का राग अलापा जाता था, वहाँ कन्याओं को पढ़ने के लिए पाठशालायें खोली जाने लगी। शूद्रों पर शोषण वर्ती बदलने लगी। यज्ञोपवीत पहनने का सबको अधिकार मिल गया। जातिवाद, भेदभाव, छुआछूत, मृत्युभोज, काल्पनिक देवी-देवता और अनेक सामाजिक कुरीतियाँ बदलने लगी। ऋषि दयानन्द ने जो समाज की रूप-रेखा बना दी, उसी को लेकर 20वीं शताब्दी के सामाजिक तथा राजनैतिक नेताओं ने कार्य किया। महात्मा गाँधी ने उन्हीं सुधारों का अनुशरण किया।

3. राजनैतिक क्षेत्र में प्रवाह-ऋषि दयानन्द की विचारधारा का आधार रूढ़ीवाद का उन्मूलन करना था, राष्ट्र के नेतृत्व में जिसका राज्य चला आ रहा हो, चाहे उसमें कई विकृतियाँ हों, वही ठीक है। उन्होंने उस पर भी प्रहार किया। उन्होंने कहा जब तक राष्ट्र का नेतृत्व करने वाला विद्वान, धार्मिक व सदाचारी व सादगी वाला न हो, तब तक वह कुशल शासन नहीं दे सकता है। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के 8वें सम्मुलास में लिखा-अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य प्रमाद परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा ही क्या कहनी, जो कुछ भी है सो विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है। दुर्दिन जब आता है तब देश को अनेक दु:ख भोगने पड़ते हैं। कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। उन्होंने राष्ट्र की उन्नति के विकास में धर्मशक्ति वेदानुकूल + राजशक्ति वेदानुकूल + ज्ञानभक्ति वेदानुकूल + धनशक्ति वेदानुकूल-सत्य के आधार पर होनी चाहिए। इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी स्वतन्त्र भारत में स्वस्थ, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक परिवर्तन करके भारत को पुन: जगत गुरू, धर्मगुरू, सोने की चिड़िया बनाना चाहते थे, जिसका प्रभाव वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व पर शनै-शनै पड़ने लगा है। ऐसे महान देव पुरुष को हम गर्व से भारत का पितामह कह सकते हैं।

सत्संग का आयोजन

वैदिक सत्संग परिवार कपूरथला की ओर से श्री धर्मेन्द्र कुमार वरिष्ठ अभियन्ता डिजायन के निवास में सत्संग का आयोजन किया गया। इस पारिवारिक सत्संग में सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री सुरेन्द सिंह गुलशन ने अपने मधुर भजनों से सत्संग में पधारे सभी भक्तगणों को मन्त्रमुग्ध किया। संस्था गायक श्री नरेन्द्र सूद ने भी अपने मधुर भजन गाए। इस कार्यक्रम में रेलवे के अनेक पदाधिकारी गण सम्मिलित हुए। अन्त में सभी सत्संग में पधारे भक्तगणों को आचार्य देवराज जी ने अपना आशीर्वाद दिया। इस सत्संग का आयोजन श्री धर्मेन्द्र कुमार ने अपने चि. निशान्त के नेवी में लेफ्टीनेन्ट कर्नल के चयन के उपलक्ष्य में किया। अन्त में लंगर की व्यवस्था की गई।

-नरेन्द्र सूद प्रचार मन्त्री सत्संग परिवार

thearyasamaj.org

कुछ उपनिषदों से (छान्दोग्योपनिषद्)

ले० डा. सुशील वर्मा गली मास्टर मूल चंद वर्मा, फाजिल्का

अपने सिद्धांतों को स्पष्ट करने हेतु उपनिषत्कार विभिन्न आख्यानों एवं कथाओं का सहारा लेते रहे हैं। अध्यात्म जैसे गूढ़ विषयों को सरल, स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाने का श्रेय उपनिषदों को ही है। यही कारण रहा होगा वेदान्तियों के लिए, उन्होंने उपनिषदों को प्रस्थान-त्रयी की शृंखला में उन्हें प्रथम स्थान देकर श्रुतिप्रस्थान कहा। जबकि गीता को स्मृतिप्रस्थान और ब्रह्मसूत्रों को तर्क-प्रस्थान का दर्जा दिया।

छान्दग्योपनिषद् के चतुर्थ प्रपाठक, के चौथे से नवें खण्ड में ब्रह्मज्ञानी सत्यकाम की कथा हमें अध्यात्म के सम्बन्धी ज्ञान प्रदत्त करती है। प्रकृति किस प्रकार उस ब्रह्म का ज्ञान जिज्ञासुओं को प्रदान करती है यही है इस कथा का सार। पंचतन्त्र एवं हितोपदेश में जिस प्रकार पशु पक्षी, जल नदियां आदि वार्ता कर हमें उपदेश प्राप्त कराती हैं उसी प्रकार उपनिषदों में भी ऐसी ही वार्ताएं मिलती है जिनके द्वारा उपनिषद्कार अपने तथ्यों को हम जन साधारण तक पहुँचाते हैं।

जबाला नामक स्त्री का एक पुत्र सत्यकाम ब्रह्मचर्य धारण करने की इच्छा से अपने माता से प्रश्न करता है कि मैंने विद्याध्ययनार्थ आचार्य के पास जाना है और वे मुझे स्वगोत्र सम्बन्धी पूछेगें तो मैं क्या उत्तर दूँ? माता पुत्र से कहती है-हे पुत्र मैं तुम्हारे गोत्र सम्बन्धी अनभिज्ञ हूँ। कारण यह कि मैंने अपनी युवावस्था तो अनेक पुरुषों की परिचारिका अर्थात् सेविका के रूप में व्यतीत की है। मैंने शुद्ध दाम्पात्य जीवन तो जाना ही नहीं। उसी यौवन काल में तेरी प्राप्ति हुई, अत: मैं तुझे गोत्र बताने गें असमर्थ हूँ। बस मेरा नाम जबाला है सत्यकाम तेरा नाम है इसलिए गुरु जी से कह देना कि तू जाबाल सत्यकाम है।

सत्यकाम गौतम-गौत्री हारिद्रुमत मुनि से जाकर बोला भगवन! मैं आपके पास ब्रह्मचर्य-वास करूँगा, इसलिए मैं आपके पास उपस्थित हुआ हूं। मुनि ने पूछा सोम्य, तेरा गोत्र क्या है ? उसने उत्तर दिया कि हे भगवन! मैं नहीं जानता मेरा गोत्र क्या है, मैंने अपनी माता श्री से पूछा तो उनका उत्तर यही था कि मैं युवावस्था में परिचारिका के रूप में अनेक पुरूषों की सेवारत थी और उसी युवावस्था में मेरा जन्म हुआ। इसलिए वे मेरा गोत्र बताने में असमर्थ है। भगवन! मेरा नाम जाबाल सत्यकाम है।

मुनि ने कहा कि जो ब्राह्मण न हो वह तो ऐसी बात कह ही नहीं सकता। ब्राह्मण का सर्वोपरि गुण तो उसकी सत्यनिष्ठा है। सत्यकाम को जन्म देने वाला अज्ञात कुल ही क्यों न हो इस ब्रह्मचारी की प्रगाढ़ सत्यनिष्ठा ही उसे ब्राह्मण बना देती है। अत: हे सोम्य! तू समिधा ले आ मैं तुझे उपनयन की दीक्षा दूँगा। क्योंकि तू सत्य से डिगा नहीं यही तुझे ब्राह्मण निर्धारित करती है। उसका उपनयन कर मुनि ने कृश तथा निर्बल 400 गौएं छांटकर कहा हे सोम्य! इनके पीछे जाओ, इनकी सेवा करो। गौओं को हांकते समय सत्यकाम ने गुरु से कहा, जब तक ये बछड़े-बछड़ी 1000 नहीं हो जाएगे मैं नहीं लौटूंगा। इस प्रकार वह कई वर्षों तक प्रवास में रहा।

कई वर्ष बीतने के पश्चात् उन गाय बैलों में से एक बैल ने सत्यकाम को पुकारा-सत्यकाम, हे सोम्य, हम हजार हो गए हैं, हमें आचार्य कुल में पहुँचा दो। वह वेदों और उपनिषदों की शैली है जहाँ जड़ पदार्थों और पशु पक्षियों को वार्तालाप करते हुए चित्रित किया है और यह सब विषय को सहज एवं सरल बनाने के लिए है। उस वृषभ ने फिर कहा-तुमने हमारी बहुत वर्षों तक सेवा की है इसलिए मैं तुम्हें 'ब्रह्म' के एक पाद का रहस्य समझता हूँ। उस वृषभ ने कहा, हे सौम्य, ब्रह्म के चार पाद हैं चार चरण हैं, जिनमें से एक नाम प्रकाशवान है। इस 'प्रकाशवान' चरण की चार कलाए हैं-प्राची-दिक्-कला दक्षिण-दिक्-कला, प्रतीची दिक्-कला, उदीची-दिक्-कला। अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर दक्षिण-ये चारों दिशाएँ उस पारब्रह्म की चार कलाएँ है। इन चतुष्कलाओं को धारण करने वाला वह परमात्मा प्रकाशवान है। इन दिशाओं के विस्तार और इनमें होने वाले प्रकाश से परमात्मा की असीम व्याप्ति तथा उसकी दिव्यता का आभास होना चाहिए। इसे ही प्रकाशोपासना कहा है। इस प्रकार परमात्मा को प्रकाशवान जानने वाला लोक में दिव्यता धारण कर ज्ञान रूपी प्रकाश वाला हो जाता है। वह दिव्य लोकों पर विजय प्राप्त करता है और स्वयं भी अपने जीवन को दिव्य बना लेता हैं। चूकि सत्यकाम चारों दिशाओं में घूमता रहा और बैल के द्वारा उसे यह ज्ञान हो गया कि जिन दिशाओं में वह फिरता रहा, वहीं उस सर्वव्यापक परमात्मा ब्रह्म का प्रकाश ही चारों और व्याप्त हो रहा है।

तत्पश्चात् बैल ने कहा कि ब्रह्म के दूसरे चरण का ज्ञान तुम्हें अग्नि द्वारा प्राप्त होगा। अगले दिन सत्यकाम ने आचार्य कुल के लिए प्रस्थान किया। जहाँ संध्या हुई, वहीं आग जलाकर, गौओं को रोककर, समिधा का आधान करके अग्नि के पीछे पूर्वा भिमुख बैठ गया। तभी अग्निदेवता प्रकट हुए और पुकारा सत्यकाम। हे सोम्य, आओ मैं तुझे ब्रह्म के दूसरे पाद का रहस्य समझा दूँ। अग्नि देव ने कहा हे सोम्य ब्रह्म के चार पाद है जिनमें से एक का नाम अनन्तवान है। इस अनन्तवान चरण की चार कलाएँ है-पृथिवी कला, अन्तरिक्ष कला, द्यौ: कला एवं समुद्रकला। जो इन चारों कलाओं को जान जाता है वह अनन्तवान हो जाता है। जो इस प्रकार ब्रह्म के चतुष्कल अनन्तवान चरण के रहस्य को जानता हुआ उपासना करता है वह दूसरे अनन्तवान लोकों को भी जीत लेता है। क्योंकि उस सत्यकाम का साथी बैल के अतिरिक्त अग्नि भी थी। अत: उस अग्नि ने उसे प्रकाश व उष्णता तो दी साथ ही यह आध्यात्मिक प्रकाश भी दिया कि पृथिवी, अन्तरिक्ष द्यौ:, समुद्र कितने विशाल है, मानो अनन्त है, इसी प्रकार ब्रह्म भी अनन्त है। ये चारों स्थान तो उस अनन्त ब्रह्माण्ड का रचयिता और नियामक परमात्मा भी अनन्त है। उसे ऐसा जानना ही अनन्तोपासना है। इसीलिए कहा गया है ''सर्व खलु इदं ब्रह्म।'' इस प्रकार उपदेश देकर उस अग्नि ने कहा कि आगे का उपदेश उसे हंस से प्राप्त होगा। हंस पक्षी को भी कहते और हंस का दूसरा अर्थ है सूर्य, आत्मा।

अगले दिन सत्यकाम के सामने सूर्यदेव प्रकट हुए और सूर्य देव ने कहा हे सोम्य। ब्रह्म के चार पाद हैं और उनमें से एक पाद ज्योतिष्मान है। इस ज्योतिष्मान की चार कलाएँ है -

अग्नि कला, सूर्य कला, चन्द्र कला एवं विद्युत कला। जो व्यक्ति ब्रह्म के चार कलाओं वाले ज्योतिष्मान चरण को जानता हुआ उसकी उपासना करता है वह इस लोक में ज्योतिष्मान हो जाता है। वह दूसरे ज्योतिष्मान लोकों को भी जीत लेता है। यहाँ तात्पर्य यह है अग्नि, सूर्य, चन्द्र एवं विद्युत में उस ब्रह्म की ही ज्योति छिटक रही है। अग्निहोत्र में प्रात: काल एवं सांय काल की आहुतियाँ सूर्य ज्योति एवं अग्नि ज्योति रूप में दी जाती है। तो क्या वह जड़ सूर्य एवं अग्नि के लिए आहुतियाँ है ? नहीं वास्तव में ये आहुतियाँ जो ज्योति सूर्य एवं अग्नि को दिव्यता प्रदान कर रही है उसके लिए है अर्थात् उस परमपिता की परम ज्योति को समर्पित आहुतियां हैं। कठोपनिषद् की यह व्याख्या उस परमात्मा की कृतियाँ ही है जो सूर्य, चन्द्रमा, विद्युत आदि को ज्योतिष्मान कर उन्हें अलकृंत कर रही है।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं,
नेमां विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्नि:।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं, तस्य
भासा सर्वमिदं विभाति।। 2/5/15

यदि उपासक उस दिव्य परमात्मन् शक्ति को ''ज्योतिषां ज्योति'' रूप में जाने तो वह भी ज्योतिर्युक्त होकर समस्य लोकों पर विजय पा लेता है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

शान्ति पाने की अद्भूत शक्तियाँ

-ले० श्री सुरेन्द्र कुमार दण्ड एम.ए.-नई दिल्ली

वेद में कहा है "मनुर्भव" अर्थात् हे मनुष्य तूने श्रेष्ठ योनि प्राप्त की है वह भी कितने जन्मों के पश्चात् आत्मा को शुद्ध करके सुधार लाकर। अब वर्तमान का सुधार करते जायें, आत्मा के भीतर के पट खोलकर ज्ञान चक्षुओं से झांकते जायें ताकि जब तू प्राण त्याग तू हंसते-हंसते अंत करे। अगर अपनी सारी शक्तियों को कमजोर समझेगा, तेरा जीवन के हर क्षेत्र में फिसलना स्वाभाविक होगा। उसकी रक्षा कर।

अथर्ववेद कहता है-

"उद्यान ते पुरुषः नावयानम"

तुझे ऊपर उठना है, नीचे गिरना नहीं, इसलिए पुरुषार्थ कर।

फिर कहता है।

"कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयोमे

सव्य, आहिता"

तेरे दाहिने हाथ में पुरुषार्थ है। तो बायें में निश्चय विजय होगी। क्योंकि दिव्य दैविक शक्तियाँ उसकी सहायता करती हैं। जो पहले परिश्रम करके थक जाता है।

स्वर्गीय टैगोर की बात पर ध्यान दें, मनुष्य बनकर शांति किसान की तरह परिश्रम करके जो पसीना निकलता है उससे मिलती है। उस तरह अपने वर्तमान जीवन को ढालकर उस मजदूर की तरह बन, जो स्पात की मशीन पर मेहनत करके मानव आदि के लिए लोहा पैदा करके, पसीना बहाकर मकान बनाकर निवास करने का साधन देता है और वर्षा और हवा के झोंकों से बचाकर सुख की नींद देता है।

पर तू अभी भी अंधकार में बैठा है, अज्ञानी बना बैठा, शरीर को हिलाना नहीं चाहता, आलसी, निकम्मा बना पड़ा रहता है, साहस खो बैठा है। फिर तुम्हें सुख कौन देगा।

ऋग्वेद कहता है।

"न व्रते श्रान्तस्य सख्याय देवः"

क्योंकि तू यदि आलसी बनेगा, जो मनुष्य की श्रेष्ठ योनि का लक्ष्य भूल जायेगा।

उस कटे पेड़ की तरह पड़ा रहेगा तो हिल नहीं सकता और ईश्वर भी नहीं सुनेगा तू अपनी शांति खो बैठेगा। इसलिए अपनी छिपी हुई शक्तियों का विकास कर जो तुझे सुख और आनन्द देने वाली है, वह है अच्छी धारणा से विचार उठेंगे, विचारों से ज्ञान आयेगा। शंकराचार्य ने ठीक कहा ज्ञान, दान सबसे बड़ा शांति और मोक्ष का मार्ग है ज्ञान विचारों को ऊपर उठाता है। अच्छे या बुरे कर्म की परख बताता है। ठीक प्रगति और सुख की दिशा देता है। सदा मानसिक शक्तियों को इकट्ठा करके मन को पाप कर्म की ओर झुकने नहीं देना। ज्ञान कर्म प्रणाली और कर्म व्यवस्था में पवित्रता पैदा करके जीवन को हर्ष उल्लास देकर शान्ति के जीवन की कला सिखाता है। आत्म विश्वास सफलता की कुंजी है।

सफलता प्राप्त करने से सदा प्रसन्नता मन और देह दोनों को प्राप्त होती है। आत्म विश्वास बार-बार अभ्यास और मनन करने से मिलता है। यदि सच्ची शांति प्राप्त करना चाहता है तो भौतिक युग जो वस्तुएँ पदार्थों का इकट्ठा, करना मनोरंजन करना, स्वार्थी वस्त्र पहनना सजाना, वासनाओं का शिकार बनाता है उन सबकी मर्यादा जान और जीवन को धर्मयुक्त, शुद्ध पवित्र बनाकर वैराग्य ला जो तुझे तेरी आध्यात्मिक शक्तियों को बल देकर प्रभु भक्ति की ओर ले जायेगा, तब तू सच्ची शान्ति पा सकेगा।

सच्ची शान्ति असत्य को त्यागने से मिलती है, कपट, पक्षपात, अत्याचार, चोरी जीभ के स्वाद और वासनाओं से नहीं मिलती, क्योंकि यह तो दुःख, कष्ट मृत्यु की ओर ले जाते है। वेद मंत्र ठीक कहते हैं।

ओ३म असतो मा सद्गमय तमसो मा

ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतगमय

शान्ति पाना है तो सत का मार्ग अपना, अंधकार से दूर हो, प्रकाश की ओर जा, अमृत पा, मृत्यु से बच। अपनी बौद्धिक शक्तियों का विकास कर बुद्धि को नाश की ओर मत ले जाओ क्योंकि इसके नाश होने से आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक शक्तियों का नाश हो जाता है फिर अपनी बुद्धि का संतुलन रख।

अतः सच्ची शांति की माया तो शारीरिक, मानसिक शक्तियों और आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासन, योगाभ्यास समाधि से मिल सकता है जो प्रभु के समीप भक्ति का मार्ग है।

अतः उपासना तो वैराग्य और योग, ध्यान, एकाग्रता से ही सफल होती है।

पाठकों, अतएव सांसारिक बंधनों और इच्छाओं की मर्यादा में रहना सार्थक जीवन ही शांति पाने का असली मार्ग है, पर प्रभु भक्ति मत भूलो, ओ३म शान्ति, शान्ति, शान्ति।

पृष्ठ 5 का शेष- कुछ उपनिषदों.....

चौते चरण का ज्ञान सत्यकाम को मद्गु (जलचर जीव, प्राण-वायु) वायुदेव ने प्रदान किया। वायुदेव ने कहा "ब्रह्म के चार पाद है जिनमें से एक का नाम "आयतनवान" है। इस की चार कलाएँ हैं-प्राण कला, चक्षु कला, श्रोत्र कला एवं मन कला। ब्रह्माण्ड का वायु पिंड का प्राण है। जैसे शरीर के प्राण पर आँख, कान और मन का अवलम्ब है। वैसे ही ब्रह्माण्ड के वायु पर जो ब्रह्माण्ड का प्राण है-संसार का अवलम्ब-आयतन है। शरीर की प्राण शक्ति ब्रह्माण्ड की वायु शक्ति है और वायु शक्ति ही ब्रह्म शक्ति है।

कहने का तात्पर्य यह कि प्राणियों के शरीर के आधारभूत प्राण नेत्र, श्रोत्र आदि ज्ञानेन्द्रियाँ और इन इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों में प्रकृत करने वाला मन-ये सब उस परमपिता परमात्मा से ही अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं। शरीर को यह आयतन प्रदान करने वाला आयतनवान् संज्ञक परमात्मा है।

इस प्रकार सत्यकाम बैल, अग्नि, सूर्य एवं वायु से उस षोडंश कला सम्पन्न परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर आचार्य कुल में लौट आया। आचार्य ने उससे कहा कि ऐसा भासता है कि तुम ब्रह्मज्ञानी हो गए हो। कथा का सारांश यही है कि प्रकृति में आँखें खोल कर फिरते हुए जिस प्रकार सत्यकाम को ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ उसी प्रकार जो भी उस परमात्मा की अनुभूति करेगा, उसे ही ब्रह्म ज्ञान प्राप्त होगा। ब्रह्म की सत्ता को सर्वत्र देखना, महसूस करना और उस सत्ता को समस्त भौतिक पदार्थों के अस्तित्व और आश्रय का कारण मानना-यही पूर्ण ज्ञान है, यही ब्रह्म के विषय में ज्ञान है।

इसी प्रकार का उपदेश सत्यकाम जाबाल जब आचार्य बन गए तो उनके शिष्य उपकोसल को भी अग्नियों द्वारा ज्ञान दिए जाने की कथा में प्राप्य है।

अगले अंक में "सदेवेदमग्र आसीत" तथा "तत्त्वमसि" का उपदेश छान्दोग्योपनिषद् को जुबानी।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला जालन्धर में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया गया

महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला एवं जालन्धर आर्य समाज अड्डा होशियारपुर के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ से आरम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी तथा श्री ओम प्रकाश शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री ध्रुव कुमार मित्तल, श्री कैलाश अग्रवाल व चौधरी राम कुमार जी सपत्नीक थे। यज्ञ के पश्चात बलिदान दिवस का कार्यक्रम शुरू हुआ जिसकी अध्यक्षता महर्षि दयानन्द मठ के ट्रस्ट के प्रधान श्री ओम प्रकाश अग्रवाल जी ने की। अमृतसर से पधारे श्री दिनेश आर्य पथिक जी ने भजन गाकर संगत को निहाल कर दिया। उन्होंने प्रभु ना दा अमृत चख बन्देया, तू रब्ब ते भरोसा रख बन्देयां भजन गाकर प्रभु नाम की महिमा का गुणगान किया। देवराज गर्ल्ज स्कूल की छात्राओं ने ओम् है जीवन हमारा, ओम प्राणाधार है भजन सुनाकर ओम महिमा का गुणगान किया। दोआबा कॉलेज के प्रिंसिपल डा. नरेश कुमार जी धीमान ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर विस्तारपूर्वक प्रकाश ड़ाला। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हर क्षेत्र में अपने नाम को सार्थक करते हुए श्रद्धा से कार्य किया। डी.ए.वी. कॉलेज के प्रिंसिपल डा. बी.बी. शर्मा जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजंलि भेंट करते हुए अपनी संस्कृति और सभ्यता को अपनाने पर बल दिया। श्री सरदारी लाल जी आर्य ने कहा कि हम सब को मिलकर स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाना चाहिए ताकि समाज को एक नई राह दिखाई जा सके। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश जी अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। मठ के प्रधान श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभी आए हुए अतिथियों, विद्वानों का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज अड्डा होशियारपुर के अधिकारियों ने पूरा सहयोग दिया। इस अवसर पर सत्यशरण गुप्ता, विनोद सेठ, सोहन लाल सेठ, रमेश कालड़ा, रवि भूषण मित्तल, सुदेश मित्तल, किरण जिंदल, किरण मित्तल, शाम मुनि, राजिन्द्र विज, चन्द्रकान्ता नरूला, सतीश आर्य, राम भुवन शुक्ला, गौतम राणा, विनीत आर्य, प्रकाश चन्द्र सुनेजा, कैलाश अग्रवाल, बाल कृष्ण अरोड़ा, श्रवण भारद्वाज, सुदेश आर्य आदि उपस्थित थे।

-सत्य शरण गुप्ता मंत्री महर्षि दयानन्द मठ

मकर संक्रान्ति पर्व मनाया जाएगा

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना द्वारा पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी मकर संक्रान्ति का पर्व 14 जनवरी 2015 को 2:30 बजे से 5:00 बजे तक बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री यज्ञ द्वारा किया जाएगा। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध विद्वाना डा. सरला भारद्वाज तथा श्रीमती मालती अग्रवाल के प्रवचन होंगे। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम में सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधार कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

-जनक रानी आर्या मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

आर्य समाज बंगा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बंगा का 33वां वार्षिक उत्सव एवं चतुर्वेद शतक यज्ञ दिनांक 12.12.14 से 14.12.14 तक बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस उत्सव के मुख्यवक्ता राष्ट्रीय प्रचारक आचार्य रामानन्द शिमला, स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती मथुरा वृन्दावन, ब्रह्मचारी सोम वीर आर्य दिल्ली यूनिवर्सिटी एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित सुखपाल आर्य सहारनपुर थे। दिनांक 12.12.14 दिन शुक्रवार को प्रात: 8 बजे से 9.30 बजे तक चतुर्वेद शतक यज्ञ आरम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति दिनांक 14.12.14 दिन रविवार को सम्पन्न हुई। यज्ञ के ब्रह्मा राष्ट्रीय प्रचारक एवं आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य रामानन्द थे और स्वामी पूर्णानन्द जी उन के सहयोगी थे। यज्ञ के पश्चात् प्रतिदिन आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेश एवं रवि तबलावादक के स्वामी दयानन्द, प्रभु भक्ति एवं देश सुधारात्मक, भजन होते रहे। पश्चात् आचार्य रामानन्द शिमला द्वारा वेदोपदेशक होता रहा। पहले दो दिन रात्रि 6.30 से 8.30 बजे तक भजन एवं वेदोपदेश होता रहा। जिसका जनता ने बड़ा लाभ उठाया। प्रतिदिन रात्रि को ऋषि लंगर और प्रात: प्रशाद वितरण होता रहा। वर्षा के बावजूद आशा से अधिक उपस्थिति होती रही। दिनांक 14.12.14 दिन रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। सभी यजमानों एवं यज्ञ में उपस्थित नर-नारियों ने बड़े हर्षोल्लास एवं श्रद्धा से आहुति डाली। इसके पश्चात् डा. वी. के अरोड़ा मालिक अरोड़ा क्लीनिक नवांशहर ने बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से ओ३म् ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर डाक्टर वी. के. अरोड़ा एवं उनकी धर्मपत्नी, श्रीमती डा. पूनम अरोड़ा को शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया गया। ध्वज गीत गाया गया। सभी उपस्थित नर-नारियों का उत्साह देखने लायक था। ध्वजारोहण के पश्चात् श्री श्याम लाल आर्य पुरोहित आर्य समाज बंगा ने सभी अतिथियों को प्रात:राश के लिए आमन्त्रित किया। ठीक 11 बजे राष्ट्रीय चरित्र निर्माण सम्मेलन शुरू हुआ। चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर की अध्यक्षता में सम्मेलन का आरम्भ हुआ। श्री शादी लाल महेन्द्रु, प्रधान आर्य समाज बंगा और मंत्री नरेन्द्र कुमार ने चौधरी साहिब को और प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित सुखपाल आर्य सहारनपुर को शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया।

सम्मेलन में आचार्य रामानन्द शिमला, स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती एवं सोम वीर आर्य के राष्ट्रीय चरित्र निर्माण कैसे हो और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर सारगर्भित प्रवचन हुए। जनता ने करतल ध्वनि द्वारा अपने उत्साह एवं मन पर पड़े प्रभाव को प्रकट किया। पंडित सुखपाल आर्य भजनोपदेशक के देश भक्ति एवं ओजस्वी भजनों ने खूब समय बांधा और श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। मंच का संचालन श्री श्याम लाल आर्य पुरोहित आर्य समाज बंगा ने किया। इस सम्मेलन एवं वार्षिकोत्सव में नवांशहर, फगवाड़ा, जालन्धर, बलाचौर, लुधियाना एवं बंगा के निकटवर्ती गांवों पठलावा, चुकन्दपुर, गढ़शंकर, बहराम जालन्धर कैंट आदि से काफी संख्या में श्रद्धालु आए हुए थे। गुरूकुल करतारपुर से आचार्य उदय प्रताप सिंह जी अपने ब्रह्मचारियों के साथ बंगा पधारे थे।

इस सम्मेलन के पश्चात् महर्षि दयानन्द सिलाई केन्द्र जो कि पिछले 32 वर्षों से निशुल्क चल रहा है, कि छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरण किए गए एवं परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले एवं यज्ञ एवं धर्म कर्म में अधिक उत्साह दिखाने वाली छात्राओं एवं भजन बोलने वाली छात्राओं को प्रशस्ति चिन्ह आदि देकर सम्मानित किया गया। पिछले सालों की तरह इस बार भी ज़रूरतमंद छात्राओं को 15 सिलाई मशीनों का दान किया गया। सिलाई मशीनों के 15 दानी सज्जनों का धन्यवाद किया गया। ठीक 2 बजे अध्यक्षीय भाषण के पश्चात् श्री शादी लाल महेन्द्रु, प्रधान आर्य समाज बंगा ने आर्य समाज बंगा की गतिविधियों का ब्यौरा जनता को दिया। और मीडिया वालों के सहयोग की भी अति प्रशंसा की और उनका धन्यवाद किया। इस उत्सव को सफल बनाने में राम भरोसे, नरेन्द्र गोगना, देवेन्द्र सूदन, देवराज, विनोद शर्मा, अशोक महेन्द्रु, सतपाल सूरी, राकेश सूरी, राम मिलन, सुशील कुमार, चांद सैनी एडवोकेट जालन्धर, विकास गोगना, बिमला आर्य, मनजिंदर कुमार आदि सभी सज्जनों का विशेष योगदान रहा। शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर लगाया गया जो कि देर तक चलता रहा। उत्सव अत्यन्त सफल रहा।

-शादी लाल महेन्द्रु प्रधान आर्य समाज बंगा

thearyasamaj.org

आर्य समाज बरनाला में वेद-ज्ञानोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बरनाला में दिनांक 04.12.14 से 7.12.14 तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतरंग सदस्य एवं आर्य समाज बरनाला के प्रधान-डॉ. सूर्यकान्त शोरी के कुशल नेतृत्व में 'वेद-ज्ञानोत्सव' बरनाला की आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य सदस्यों के सहयोग से श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के ओजस्वी वैदिक प्रवक्ता श्रद्धेय आचार्य आर्य नरेश जी एवं महान भजनोपदेशक पं. दिनेश आर्य 'पथिक' जी दिव्य आध्यात्मिक-सत्संग हेतु आमंत्रित किए गए थे।

दिनांक 04.12.14 को रात्रि 8:00 बजे से 10:00 बजे तक गीता भवन सत्संग भवन में गीता भवन कमेटी के प्रधान श्री बसन्त गोयल जी के सौजन्य से दिव्य सत्संग का आयोजन किया गया। इसके मुख्य संचालक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतरंग सदस्य श्री भारत भूषण मैनन 'एडवोकेट' जी थे। श्रद्धेय आचार्य नरेश जी ने योगीराज श्री कृष्ण जी की गो-भक्ति का वर्णन करते हुए श्रीमद्भगवद् गीता के उपदेशों द्वारा सत्कर्म के लिए प्रेरणा दी। 'पथिक' जी के सुमधुर वैदिक भजनामृत का पान कर श्रोता गण मंत्र मुग्ध हो गए। आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में वैदिक-संस्कृति से युक्त नैतिक भावना जागृत करने हेतु दिनांक 5.12.14 को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज में तथा दिनांक 6.12.14 को गाँधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में यज्ञ, भजन एवं दिव्य प्रवचन का आयोजन किया गया। दिनांक 5 दिसम्बर से 6 दिसम्बर तक रात्रि-कालीन का दिव्य आध्यात्मिक सत्संग रात्रि 8:00 बजे से 10:00 बजे तक आर्य समाज हंडियाया बाजार में बड़े ही श्रद्धापूर्वक मनाया गया। मंच-संचालन का कार्य-भार मंत्री-तिलक राम ने किया। पूरे कार्यक्रम के व्यवस्थापक के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतरंग सदस्य- श्री भारत भूषण मैनन 'एडवोकेट' ने बड़े ही निष्ठा के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाई। संगीत सदन बरनाला से श्री कमल शर्मा जी, आर्य समाज पटियाला के प्रधान श्री राज कुमार सिंगला तथा आर्य समाज संगरूर के प्रधान जी के साथ अधिक संख्या में सदस्य गण रात्रिकालीन सत्संग में शामिल हुए।

दिनांक 7 दिसम्बर, रविवार को वेद-ज्ञानोत्सव के समापन पर इक्कीस कुण्डीय यज्ञ किया गया। जिसमें इक्कीस यज्ञमानों ने सपरिवार देश की सुख-समृद्धि के लिए यज्ञ में आहुतियाँ डालीं। यज्ञ के ब्रह्मा एवं समारोह के मुख्य प्रवक्ता आचार्य नरेश जी ने पंच-महायज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला। समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रेम भारद्वाज, महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए आर्य समाज बरनाला को सफल आयोजन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के निर्देशानुसार आर्य समाज बरनाला वेद प्रचार के कार्य में अग्रसर है। प्रोत्साहन स्वरूप इस महान कार्य के लिए उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से इक्कीस हजार रूपये की सहायता राशि प्रदान करने की घोषणा की। इस अवसर पर आर्य समाज धूरी के प्रधान श्री प्रहलाद जी व पूर्व प्रधान श्री सोम प्रकाश आर्य ; आर्य समाज तपा के प्रधान- डॉ. राज कुमार शर्मा व सी. मारकण्डा जी अपने अन्य आर्य सदस्यों के साथ शामिल हुए। प्रिंसीपल-श्री राम कुमार सोबती जी, आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री राम चन्द्र आर्य, पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री जी का कार्यक्रम की सफलता में विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम के अन्त में सभी यज्ञमानों तथा बरनाला के गणमान्य सदस्यों को 'गायत्री मंत्र' के स्वरूप के साथ श्रद्धेय आचार्य नरेश जी के कर कमलों से सम्मानित किया गया। अन्त में प्रधान डॉ. सूर्य कान्त शोरी जी ने उपस्थित जन-समुदाय को उनके सहयोग एवं योगदान के लिए धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के बाद ऋषि-प्रसाद वितरण किया गया। सभी आगन्तुक श्रोता गण एवं जन-समुदाय ने श्रद्धापूर्वक ऋषि-लंगर ग्रहण किया।

आर्य समाज बरनाला के वेद ज्ञानोत्सव के अवसर पर पधारे सभा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज तथा उनके साथ मंच पर बैठे आचार्य आर्य नरेश आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए।

-तिलक राम, मन्त्री आर्य समाज बरनाला

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया गया जिसमें मुख्य यज्ञ ब्रह्मा पंडित शिवाजी शास्त्री द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। इसमें मुख्य यजमान श्री हिन्दपाल सेठी तथा रंजनी सेठी ने आहूति प्रदान की। आर्य समाज की भजन गायिका सोनू भारती ने स्वामी श्रद्धानंद वीर बलिदान तेरे तों जमाना सदके भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री अश्विनी कुमार जी डोगरा ने अपने विचार रखते हुये कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी एक अमर बलिदानी ऐसे महापुरुष हुये जोकि स्वामी दयानन्द जी के सम्पर्क में आए तो श्रद्धानंद जी एक क्रान्तिकारी समाज सुधारक और राष्ट्रभक्त बन गये। मैकाले की शिक्षा पद्धति को नकारते हुये गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को शुरू किया और गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना की जोकि हरिद्वार में विश्वविख्यात विद्यालय गुरुकुल कांगडी के नाम से चल रहा है। वह कांग्रेस के प्रमुख नेता थे लेकिन शुद्धि आन्दोलन पर महात्मा गांधी द्वारा विरोध किये जाने पर इन्होंने कांग्रेस को छोड़ दिया। क्योंकि स्वामी जी शुद्धि के पक्ष में थे और महात्मा गांधी तुष्टिकरण के पक्ष में थे। करतारपुर से स्वामी धर्मानंद जी ने बताया कि स्वामी जी एक अद्भुत दृढ़ संकल्प वाले एक महान व्यक्ति थे और किस तरह वह मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद जी बनते हैं और किस तरह वह वकालत छोड़ कर एक गुरुकुल की नींव डालते हैं और अपनी संतानों से गुरुकुल की शुरूआत करते हैं। उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन के सभी मर्मस्पर्शी पलों को प्रस्तुत किया। पंडित शिवाजी शास्त्री ने स्वामी जी को एक निर्भीक पुरुष बताते हुये जामा मस्जिद की प्राचीर से वेद मंत्रों के उच्चारण से अपना भाषण आरम्भ किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री रणजीत आर्य ने स्वामी जी के विषय में बताते हुये उन्हें एक युगपुरुष बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी एक क्रान्तिकारी नेता थे। स्वामी जी को डाक्टर अम्बेदकर ने दलितों का सबसे बड़ा मसीहा कहा था। महात्मा गांधी जी इन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे। स्वामी श्रद्धानंद जी ने ही कर्मचंद मोहन दास गांधी को महात्मा की उपाधि दी।

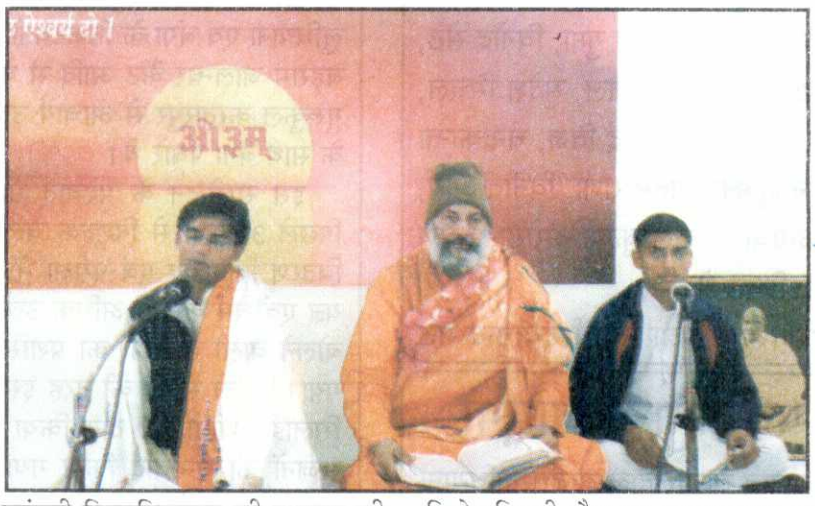

इस अवसर पर भूपिन्द्र उपाध्याय जी, चौधरी हरिचंद जी, रमेश मुटरेजा, हर्ष लखनपाल, सुभाष आर्य, विनोद तिवारी, बैजनाथ, पवन शुक्ला, उमा देवी, अनु आर्या, इन्दु आर्या, मोहन लाल, मनु आर्य, सुनील मिश्रा, संगीता तिवारी, दीपक अग्रवाल, रमन जोशी, तिलक राज, ललित मोहन, स्नेह लता, राजीव शर्मा, संगीता मल्होत्रा, सुनील मल्होत्रा, पायल मेहरा, ममता मेहरा, बनारसी लाल, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, दिव्य आर्य, किशनपाल आर्य, साजन आर्य, प्रिया कुमारी, रैना शर्मा, सुनयना शर्मा, राजिन्द्र शर्मा, नीरज शर्मा, किरण शर्मा, जुगल किशोर शर्मा, नीलम मिश्रा, राकेश बाबा, सरिता बाबा, लवलीन कुमार, अमन आर्य, गौरव आर्य, हरविन्द्र सिंह बेदी, राजीव कुन्दरा, सपना कालिया, अंजलि शर्मा, प्रेम नाथ, मनप्रीत शर्मा उपस्थित हुये।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।